1 कुरिन्थियों अध्याय 10

रविवार, 20 अक्टूबर 2019

अध्याय 8 में, प्रेरित पौलुस ने मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन के विषय पर चर्चा की थी। इसके बाद उन्होंने थोड़े समय के लिये अपने प्रेरित होने की रक्षा करने की ओर ध्यान दिया, जिसमें उन्होंने मुख्य रूप से अपने स्वयं के सेवकाई के जीवन, भण्डारपन, बलिदान और आत्म-अनुशासन की ओर संकेत किया। अब वह फिर से मूर्तियों और मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन के विषय में सत्य साझा करने के लिये लौटते हैं। प्रेरित पौलुस इब्रानियों और उनकी गलतियों की ओर संकेत करते हैं, ताकि उनसे हम शिक्षा ले सकें। वह मूर्तियों को चढ़ाए गए भोजन में सहभागी होने के आत्मिक पक्ष को प्रकट करते हैं, और फिर इस विषय पर अंतिम निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं, साथ ही उस हृदय की मनःस्थिति पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं जिसके साथ हमें इसे अपने जीवन में जीना है।

प्रारंभिक कलीसिया की थोड़ी पृष्ठभूमि। लगभग 49 ईस्वी में, पौलुस की पहली और दूसरी मिशनरी यात्राओं के बीच, यरूशलेम में एक सभा हुई, जिसे सामान्यतः यरूशलेम सभा कहा जाता है, जिसका वर्णन प्रेरितों के काम 15 में मिलता है। यरूशलेम में प्रेरितों और प्राचीनों ने, पौलुस, बरनबास और अन्य लोगों के साथ मिलकर इस बात पर विचार किया कि मसीह में विश्वास करने वाले अन्यजातियों का मार्गदर्शन कैसे किया जाए। उन्होंने अपनी चर्चा का निष्कर्ष इस प्रकार प्रस्तुत किया:

प्रेरितों के काम 15:28,29
28 पवित्र आत्मा को और हम को ठीक जान पड़ा कि इन आवश्यक बातों को छोड़, तुम पर और बोझ न डालें;
29 कि तुम मूरतों पर बलि किए हुओं से और लहू से, और गला घोंटे हुओं के मांस से, और व्यभिचार से दूर रहो। इनसे दूर रहो तो तुम्हारा भला होगा। आगे शुभ।"

यरूशलेम सभा के बाद पौलुस अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर गए, और उसी समय उन्होंने कुरिन्थियों में कलीसिया की स्थापना की। प्रेरित पौलुस ने निश्चय ही उन्हें यह निर्देश दिया होगा कि वे "मूर्तियों को चढ़ाई हुई वस्तुओं से बचे रहें।" परन्तु कुरिन्थियों के विश्वासियों को इस विषय में और अधिक समझ की आवश्यकता थी, और इसी कारण पौलुस ने उन्हें इस विषय पर विस्तार से लिखा।

अपने अध्ययन के लिये हम इस अध्याय को निम्नलिखित भागों में विभाजित करते हैं:
इस्राएल के इतिहास से सीख (10:1-14)
कटोरा और रोटी (10:15-18)
मूर्तियाँ और बलिदान (10:19-24)
मूर्तियों को चढ़ाया गया भोजन (10:25-33)

इस्राएल के इतिहास से सीख (10:1-14)

[1] हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इस बात से अनजान रहो कि हमारे सब बापदादे बादल के नीचे थे, और सब के सब समुद्र के बीच से पार हो गए;
[2] और सब ने बादल में और समुद्र में, मूसा का बपतिस्मा लिया;
[3] और सब ने एक ही आत्मिक भोजन किया;
[4] और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ–साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था।
[5] परन्तु परमेश्वर उनमें से बहुतों से प्रसन्न न हुआ, इसलिये वे जंगल में ढेर हो गए।
[6] ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरीं, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें;
[7] और न तुम मूर्तिपूजक बनो, जैसे कि उनमें से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, "लोग खाने–पीने बैठे, और खेलने–कूदने उठे।"
[8] और न हम व्यभिचार करें, जैसा उनमें से कितनों ने किया; और एक दिन में तेईस हज़ार मर गये।
[9] और न हम प्रभु को परखें, जैसा उनमें से कितनों ने किया, और साँपों के द्वारा नष्ट किए गए।
[10] और न तुम कुड़कुड़ाओ, जिस रीति से उनमें से कितने कुड़कुड़ाए और नष्ट करनेवाले के द्वारा नष्ट किए गए।
[11] परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं; और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गईं हैं।
[12] इसलिये जो समझता है, "मैं स्थिर हूँ," वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।
[13] तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।
[14] इस कारण, हे मेरे प्रियो, मूर्तिपूजा से बचे रहो।

वचन 1-6:

प्रेरित पौलुस इतिहास की ओर दृष्टि करते हैं और परमेश्वर द्वारा इब्रानियों के साथ किए गए व्यवहार से शिक्षा लेते हैं, जब वह उन्हें मिस्र से निकालकर प्रतिज्ञा किए हुए देश की ओर ले जा रहे थे।

जब वे यात्रा कर रहे थे, तो उन्होंने बादल के खम्भे और आग के खम्भे का अनुभव किया, लाल समुद्र के बीच से होकर निकले, चट्टान से पानी प्राप्त किया, स्वर्ग से मन्ना पाया, और ऐसी अनेक अद्भुत बातों का अनुभव किया।

- **वचन 4:**

और सब ने एक ही आत्मिक जल पीया, क्योंकि वे उस आत्मिक चट्टान से पीते थे जो उनके साथ–साथ चलती थी, और वह चट्टान मसीह था।

परमेश्वर उनके साथ थे। वास्तव में, पौलुस यह बताता है कि मसीह उनके साथ थे (वचन 4)। यह इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि मसीह अनादि काल से परमेश्वर थे और इस संसार में अपने शारीरिक जन्म से पहले भी अस्तित्व में थे। यह हमें पुराने नियम में पाए जाने वाले प्रकारों, छायाओं या पूर्व-चित्रों के विषय में भी सिखाता है। पुराने नियम में ऐसे प्रकार हैं जो यीशु मसीह की ओर संकेत करते हैं और उन बातों की ओर जो परमेश्वर नए नियम में प्रकट करने वाले थे।

मिस्र से उनके निर्गमन (Exodus) के समय से लेकर होरेब (सिनै पर्वत) पर उनके समय की समाप्ति तक, कुल समय 1 वर्ष, 1 महीना और 5 दिन था। होरेब से कादेश तक की उनकी यात्रा 11 दिनों की थी, जो यरदन नदी के ठीक पूर्व में स्थित था। यहीं से उन्होंने 12 भेदियों को भेजा, जो अपनी रिपोर्ट लेकर लौटे। इस्राएल के लोगों ने 10 भेदियों की रिपोर्ट पर विश्वास करना चुना, और परिणामस्वरूप वे 38 वर्षों तक सेईर पर्वत के चारों ओर भटकते रहे। सेईर पर्वत एक पर्वत-श्रृंखला थी, जो उत्तर से दक्षिण तक लगभग 70 मील और पूर्व से पश्चिम तक लगभग 30 मील फैली हुई थी। इस्राएल के लोगों ने उस पर्वत के चारों ओर 38 वर्ष बिताए, जब तक कि परमेश्वर ने कहा: *"तुम लोगों को इस पहाड़ के बाहर बाहर चलते हुए बहुत दिन बीत गए, अब घूमकर उत्तर की ओर चलो।"* (व्यवस्थाविवरण 2:3)

- **वचन 6-11:**

6 ये बातें हमारे लिये दृष्टान्त ठहरीं, कि जैसे उन्होंने लालच किया, वैसे हम बुरी वस्तुओं का लालच न करें;
7 और न तुम मूर्तिपूजक बनो, जैसे कि उनमें से कितने बन गए थे, जैसा लिखा है, "लोग खाने–पीने बैठे, और खेलने–कूदने उठे।"
8 और न हम व्यभिचार करें, जैसा उनमें से कितनों ने किया; और एक दिन में तेईस हज़ार मर गये।
9 और न हम प्रभु को परखें, जैसा उनमें से कितनों ने किया, और साँपों के द्वारा नष्ट किए गए।
10 और न तुम कुड़कुड़ाओ, जिस रीति से उनमें से कितने कुड़कुड़ाए और नष्ट करनेवाले के द्वारा नष्ट किए गए।
11 परन्तु ये सब बातें, जो उन पर पड़ीं, दृष्टान्त की रीति पर थीं; और वे हमारी चेतावनी के लिये जो जगत के

उनके अनुभवों की ओर पीछे देखते हुए, प्रेरित पौलुस कुछ विशेष पापों की ओर संकेत करते हैं जिनके कारण वे प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश नहीं कर पाए। पौलुस हमें बताते हैं कि ये बातें हमारे लिये उदाहरण हैं, ताकि हम उनसे सीखें और वही पाप और गलतियाँ न दोहराएँ।

1. बुरी बातों की लालसा (वचन 6)

(देखें: गिनती 11:4,5,34; भजन संहिता 106:14)
परमेश्वर ने उन्हें मिस्र में मांस का आनंद लेने दिया था। परन्तु अब, संक्रमण के समय में, मांस की उनकी लालसा "अनुचित" थी। जो बात किसी एक समय में स्वीकार्य हो सकती है, वह किसी दूसरे समय में उचित नहीं भी हो सकती।

2. मूर्तिपूजा (वचन 7)

(देखें: निर्गमन 32:1-8; भजन संहिता 106:19-23)
मेरे जीवन में जो भी परमेश्वर का स्थान ले लेता है, वही मूर्ति है।
"चुप्पी" या "निष्क्रियता" के समयों या मौसमों में सावधान रहें, जब ऐसा लगता है कि परमेश्वर कुछ कह नहीं रहे या कुछ कर नहीं रहे—ऐसे समयों में हम अपने लिये स्वयं ही कुछ गढ़ लेने की प्रवृत्ति रखते हैं। परमेश्वर की अंतिम आज्ञा पर बने रहें।

3. यौन अशुद्धता (वचन 8)

(देखें: गिनती 25:1-9; भजन संहिता 106:28-29)

हमारी यौन इच्छाएँ परमेश्वर को समर्पित होनी चाहिए।
पौलुस की तरह, मुझे भी *"अपनी देह को वश में करना"* चाहिए, *"ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही अयोग्य ठहरूँ।"* (1 कुरिन्थियों 9:27)

4. मसीह की परीक्षा लेना (वचन 9)

(देखें: निर्गमन 17:1-7; गिनती 21:4-6)
"उन्होंने यह कहकर यहोवा की परीक्षा की, 'क्या यहोवा हमारे बीच है या नहीं?'" (निर्गमन 17:7)
"...मार्ग में लोगों का मन बहुत उदास हो गया। और लोगों ने परमेश्वर और मूसा के विरुद्ध बातें कीं..." (गिनती 21:4,5)
एम्प्लीफाइड बाइबल मसीह की परीक्षा लेने को इस प्रकार व्यक्त करती है—हमारा प्रयास कि हम *"उनके धीरज की परीक्षा लें, उनके उद्देश्य पर प्रश्न उठाएं, या उनकी भलाई का अनुचित लाभ उठाएं"* (एम्प्लीफाइड बाइबल)।

हतोत्साह के समयों में हमें सावधान रहना चाहिए कि हम परमेश्वर से इस प्रकार प्रश्न न करें कि मानो हम उन्हें स्वयं को सिद्ध / साबित करने की चुनौती दे रहे हों। परमेश्वर अपने आप में पूर्णतः सुरक्षित हैं और उन्हें किसी के सामने स्वयं को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है।
हमें उसकी प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करना चाहिए, न कि उसकी प्रतिज्ञाओं पर प्रश्न उठाना चाहिए।

5. कुड़कुड़ाना और शिकायत करना (वचन 10)

(देखें: निर्गमन 16:2; गिनती 14:2,37)
अस्थायी कठिनाइयों को यह अनुमति न दें कि वे आपको कुड़कुड़ाने और शिकायत करने के लिये प्रेरित करें, और इस प्रकार आप परमेश्वर के उद्देश्यों से वंचित हो जाएँ।
जब आप संक्रमण के समय में होते हैं, तो परिस्थितियाँ अस्थिर होंगी। अतीत की जानी-पहचानी सुविधाओं की ओर लौट जाना कोई विकल्प नहीं है। केवल एक ही मार्ग है—आगे बढ़ना, अपनी प्रतिज्ञा की भूमि की ओर। अपने अगुवों के विषय में जो आप बोलते हैं, उसके प्रति सावधान रहें।

ये पाँच पाप लोगों को जंगल में ही रोके रहे और उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने से वंचित रखा:

1. बुरी बातों की लालसा
2. मूर्तिपूजा
3. यौन अशुद्धता
4. मसीह की परीक्षा लेना
5. कुड़कुड़ाना और शिकायत करना

- **वचन 12:**

इसलिये जो समझता है, "मैं स्थिर हूँ," वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।

हमें सदा चौकस, सतर्क और नम्र रहना चाहिए। घमण्ड को प्रवेश न करने दें, जहाँ हम यह सोचने लगें कि हम गिर नहीं सकते। हमें सदा परमेश्वर पर निर्भर बने रहना चाहिए।

- **वचन 13:**

तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है। परमेश्वर सच्चा है और वह तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन् परीक्षा के साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको।

यूनानी भाषा में "परीक्षा" के लिये शब्द *'peirasmos' 'पैरास्मोस'* का प्रयोग हुआ है, जिसका अर्थ हो सकता है—कोई भी परीक्षा, जाँच, अनुभव या सिद्ध करना, जैसे (A) विपत्ति, क्लेश, कठिनाई, या (B) पाप की ओर लुभाने या उकसाने वाली बात, चाहे वह भीतर की इच्छाओं से हो या बाहरी स्रोतों से। प्रेरित पौलुस यहाँ जिस संदर्भ में लिख रहे हैं, उससे हम समझते हैं कि वह विशेष रूप से पाप की ओर लुभाने या उकसाने की बात कर रहे हैं।

'निकास' के लिये यूनानी शब्द *'ekbasis' 'कबेसिस'* प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ EXIT/ एग्ज़िट—यानि किसी बात से बाहर निकलने का मार्ग, या END/ ऐंड —किसी बात का अंत, दोनों हो सकता है।

हर एक परीक्षा के साथ जो हमारे सामने आती है, परमेश्वर ने एक EXIT, अर्थात् बाहर निकलने का मार्ग उपलब्ध किया है। यदि हम जय पाना चाहते हैं, तो हमें उस EXIT के द्वारा दौड़कर निकलना होगा। वैकल्पिक रूप से, परमेश्वर उस परीक्षा को END, अर्थात् अंत तक भी ले आते हैं। हमें परीक्षा के अंत (END) तक उसका विरोध करना है और उसके आगे झुकना नहीं है

जब परीक्षा का सामना हो—या तो बाहर निकलने का मार्ग (EXIT) के द्वारा दौड़कर निकलो, या अंत (END) तक डटे रहो। हार मत मानो।

- **वचन 14:**

इस कारण, हे मेरे प्रियो, मूर्तिपूजा से बचे रहो।

जो कुछ भी कहा गया है, उसके प्रकाश में हमें मूर्तिपूजा से दूर भागना है।

याद करें कि अध्याय 6 में पौलुस ने हमें "व्यभिचार से भागने" की शिक्षा दी थी (6:18)। उन्होंने वही चेतावनी हमें यहाँ भी दी है—मूर्तिपूजा से भागो। जैसे-जैसे हम इस अध्याय में आगे बढ़ेंगे, वह इसका कारण स्पष्ट करेंगे।

कटोरा और रोटी (10:15-18)

15 मैं बुद्धिमान जानकर तुम से कहता हूँ: जो मैं कहता हूँ, उसे तुम परखो।
16 वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं; क्या मसीह के लहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं?
17 इसलिये कि एक ही रोटी है तो हम भी जो बहुत हैं, एक देह हैं: क्योंकि हम सब उसी एक रोटी में भागी होते हैं।
18 जो शरीर के भाव से इस्राएली हैं, उनको देखो: क्या बलिदानों के खानेवाले वेदी के सहभागी नहीं?

पौलुस यह पहचानता है कि वह बुद्धिमान (समझदार, विचारशील, विवेकपूर्ण, सूझ-बूझ वाले) लोगों से बात कर रहा है और वह उन्हें आमंत्रित करता है कि वे इस विषय पर उसके साथ मिलकर विचार करें।

पौलुस हमें प्रभु की मेज़ के आत्मिक महत्व को प्रकट करता है, जिसमें हम विश्वासियों के रूप में एक साथ भाग लेते हैं:

यूनानी भाषा में सहभागिता के लिये शब्द *'koinōnia' 'कोइनोनिया'* है, जिसका अर्थ है—संगति, साझेदारी, भाग लेना, सहभागिता, मेल-जोल, और सहभागी होना।

आशीष का कटोरा—यह कटोरा जिसे हम पीते हैं, हमारे जीवनों में आशीष पहुँचाने के उद्देश्य से है।

जिसे हम आशीष देते हैं—हम उसे पीने से पहले उस पर आशीष बोलते और घोषित करते हैं।

यह मसीह के लहू की सहभागिता है—हम (विश्वास के प्रत्युत्तर में) यीशु मसीह के लहू के लाभों में सहभागी होते हैं।

मसीह के शरीर की सहभागिता—हम (विश्वास के प्रत्युत्तर में) उन सब बातों में सहभागी होते हैं जो मसीह ने हमारे लिये क्रूस पर कीं। हम उसकी आत्मिक देह, अर्थात कलीसिया का हिस्सा बनकर भी सहभागी होते हैं।

हम सबका उस एक ही रोटी में भाग लेना इस बात की गवाही है कि हम आत्मिक रूप से "एक देह" हैं।

वचन 18 में, पौलुस इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि पुराने नियम में इस्राएल के लोगों की परमेश्वर की आराधना (अर्थात वेदी के सहभागी होना), वेदी पर चढ़ाए गए बलिदानों को खाने के द्वारा व्यक्त होती थी। वेदी के बलिदानों को खाने का अर्थ यह था कि वे वेदी पर होने वाली हर बात में सहभागी (यूनानी *'koinōnos' 'कोइनोनोस'* सहभागी, कोई जो किसी में हिस्सा लेता है या किसी के साथ संबंध / साझेदारी में लाया गया) बन जाते थे—परमेश्वर की आराधना, जो कुछ परमेश्वर लोगों के लिये प्रकट करते थे, आदि।

यहाँ महत्वपूर्ण सत्य यह है कि जब हम किसी ऐसी वस्तु को खाते या पीते हैं जो परमेश्वर की आराधना की अभिव्यक्ति के रूप में प्रयुक्त होती है, तब उसमें आशीष, सहभागिता, लाभों में भागीदारी, और बहुतों का एक होना—ये सब आत्मिक पहलू जुड़े होते हैं।

मूर्तियाँ और बलिदान (10:19-24)

19 फिर मैं क्या कहता हूँ? क्या यह कि मूर्ति पर चढ़ाया गया बलिदान कुछ है, या मूर्ति कुछ है?

[20] नहीं, वरन् यह कि अन्यजाति जो बलिदान करते हैं; वे परमेश्वर के लिये नहीं परन्तु दुष्टात्माओं के लिये बलिदान करते हैं और मैं नहीं चाहता कि तुम दुष्टात्माओं के सहभागी हो।
[21] तुम प्रभु के कटोरे और दुष्टात्माओं के कटोरे दोनों में से नहीं पी सकते। तुम प्रभु की मेज और दुष्टात्माओं की मेज दोनों के साझी नहीं हो सकते।
[22] क्या हम प्रभु को क्रोध दिलाते हैं? क्या हम उस से शक्तिमान हैं?
[23] सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब लाभ की नहीं: सब वस्तुएँ मेरे लिये उचित तो हैं, परन्तु सब वस्तुओं से उन्नति नहीं।
[24] कोई अपनी ही भलाई को नहीं, वरन् दूसरों की भलाई को ढूँढ़े

प्रभु की मेज़ में सहभागी होने की बात करने के बाद, पौलुस अब मूर्तियों और मूर्तियों को चढ़ाए गए बलिदानों के विषय को संबोधित करता है।

पौलुस यह स्वीकार करता है—जैसा कि उसने पहले अध्याय 8 में भी कहा था—कि मूर्ति अपने आप में कुछ नहीं है, और जो कुछ मूर्ति को चढ़ाया जाता है, वह भी अपने आप में कुछ नहीं है। वास्तव में ये बलिदान मूर्तियों के पीछे की आत्माओं, अर्थात दुष्टात्माओं को चढ़ाए जाते हैं। इसलिये जब मूर्तियों को चढ़ाई गई वस्तु को खाया जाता है, तो हम उन आत्माओं के साथ संगति (साझेदारी, संबंध) में आते हैं जो उस मूर्ति के पीछे हैं। इसलिए जब एक विश्वासी प्रभु की मेज़ में भाग लेता है, तो वह प्रभु के साथ संगति करता है, और यदि वही विश्वासी मूर्तियों को चढ़ाए गए बलिदानों में भाग लेता है, तो वह दुष्टात्माओं के साथ संगति करता है। हम सच्ची आराधना को मूर्ति-पूजा के साथ नहीं मिला सकते। यह स्वीकार्य नहीं है और ऐसा नहीं होना चाहिए। यह प्रभु के अपनी प्रजा के लिये जलन भरे प्रेम और देखभाल को उकसाता है, और हम उससे अधिक सामर्थी नहीं हैं।

वचन 23 में प्रेरित पौलुस उस कथन को दोहराता है जिसे उसने पहले अध्याय 6 में कहा था, कि कुछ बातें वैध (सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य) हो सकती हैं, परन्तु हमें यह परखना चाहिए कि क्या वे आत्मिक रूप से लाभदायक और उन्नति करने वाली (घर बनाने के समान निर्माण करने वाली) हैं। इसलिये हम केवल इस कारण से कुछ नहीं करते कि वह स्वीकार्य लगती है, या लोकप्रिय मत के अनुरूप है, या सामान्य चलन में है।

इस विषय में एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें दूसरे व्यक्ति के कल्याण पर भी विचार करना चाहिए।

इस प्रकार प्रेरित पौलुस ने मूर्तियों और मूर्तियों को चढ़ाई गई वस्तुओं को खाने के विषय को स्पष्ट किया है:

1. आत्मिक पहलू जो इसमें सम्मिलित हैं (वचन 19-21)
2. परमेश्वर की आराधना और दुष्टात्माओं की आराधना को मिलाया नहीं जा सकता (वचन 22)
3. कोई बात सांस्कृतिक रूप से स्वीकार्य हो सकती है, परन्तु आवश्यक नहीं कि वह लाभदायक और उन्नति करने वाली हो (वचन 23)
4. मुझे दूसरे व्यक्ति के कल्याण पर भी विचार करना है (वचन 24)

फिर पौलुस इस विषय को संक्षेप में प्रस्तुत करता है:

मूर्तियों को चढ़ाया गया भोजन (10:25-33)

25 जो कुछ कस्साइयों के यहाँ बिकता है, वह खाओ और विवेक के कारण कुछ न पूछो?
26 "क्योंकि पृथ्वी और उस की भरपूरी प्रभु की है।"
27 यदि अविश्वासियों में से कोई तुम्हें नेवता दे, और तुम जाना चाहो, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए वही खाओ; और विवेक के कारण कुछ न पूछो।
28 परन्तु यदि कोई तुम से कहे, "यह तो मूर्ति को बलि की हुई वस्तु है," तो उसी बतानेवाले के कारण और विवेक के कारण न खाओ।
29 मेरा मतलब तेरा विवेक नहीं, परन्तु उस दूसरे का। भला, मेरी स्वतंत्रता दूसरे के विचार से क्यों परखी जाए?
30 यदि मैं धन्यवाद करके साझी होता हूँ, तो जिस पर मैं धन्यवाद करता हूँ उसके कारण मेरी बदनामी क्यों होती है?
31 इसलिये तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।
32 तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिये ठोकर के कारण बनो।
33 जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूँ, और अपना नहीं परन्तु बहुतों का लाभ ढूँढ़ता हूँ कि वे उद्धार पाएँ।

जैसा कि हमने अध्याय 8 में उल्लेख किया था, मूर्तियों को चढ़ाई गई वस्तुओं को खाने के विषय में विश्वासी के सामने दो परिस्थितियाँ थीं: (A) जो मांस मन्दिर में बलिदान के रूप में चढ़ाया गया था, उसका कुछ भाग बाद में अन्य मांस के साथ बाज़ार में बेच दिया जाता था। जब कोई बाज़ार जाता था, तो यह पहचान पाना हमेशा संभव नहीं होता था कि कौन सा मांस मूर्ति को चढ़ाया गया है और कौन सा नहीं। (B) किसी विश्वासी को मन्दिर में या कहीं और मूर्तियों को चढ़ाया हुआ भोजन परोसा जा सकता था। पौलुस इन दोनों परिस्थितियों को संबोधित करता है।

- **वचन 25,26:**

25 जो कुछ कस्साइयों के यहाँ बिकता है, वह खाओ और विवेक के कारण कुछ न पूछो?
26 "क्योंकि पृथ्वी और उस की भरपूरी प्रभु की है।"

जो कुछ तुम बाज़ार से खरीदते हो, उस पर प्रार्थना करो और उसे खाओ। पौलुस ने स्पष्ट रूप से सिखाया कि जब हम भोजन को धन्यवाद के साथ ग्रहण करते हैं, उस पर परमेश्वर का वचन बोलते हैं और प्रार्थना करते हैं, तो वह पवित्र ठहराया जाता है (अर्थात शुद्ध और पवित्र किया जाता है)।

1 तीमुथियुस 4:3-5
3 जो विवाह करने से रोकेंगे, और भोजन की कुछ वस्तुओं से परे रहने की आज्ञा देंगे, जिन्हें परमेश्वर ने इसलिये सृजा कि विश्वासी और सत्य के पहिचाननेवाले उन्हें धन्यवाद के साथ खाएँ।
4 क्योंकि परमेश्वर की सृजी हुई हर एक वस्तु अच्छी है, और कोई वस्तु अस्वीकार करने के योग्य नहीं; पर यह कि धन्यवाद के साथ खाई जाए,
5 क्योंकि परमेश्वर के वचन और प्रार्थना के द्वारा शुद्ध हो जाती है।

वचन 27-30:

27 यदि अविश्वासियों में से कोई तुम्हें नेवता दे, और तुम जाना चाहो, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए वही खाओ; और विवेक के कारण कुछ न पूछो।
28 परन्तु यदि कोई तुम से कहे, "यह तो मूर्ति को बलि की हुई वस्तु है," तो उसी बतानेवाले के कारण और विवेक के कारण न खाओ।
29 मेरा मतलब तेरा विवेक नहीं, परन्तु उस दूसरे का। भला, मेरी स्वतंत्रता दूसरे के विचार से क्यों परखी जाए?
30 यदि मैं धन्यवाद करके साझी होता हूँ, तो जिस पर मैं धन्यवाद करता हूँ उसके कारण मेरी बदनामी क्यों होती है?

इसी प्रकार, जब कोई अविश्वासी तुम्हें अपने घर भोजन के लिये बुलाए, तो जो कुछ तुम्हें परोसा जाए, उसे खाओ। जब तुम प्रार्थना करते हो, धन्यवाद देते हो, और भोजन पर परमेश्वर का वचन बोलते हो, तो वह शुद्ध हो जाता है। तुम्हारा विवेक शुद्ध रहता है। अपने भोजन का आनंद लो!

दूसरी स्थिति में, यदि आपको स्पष्ट रूप से यह बताया जाए कि यह भोजन मूर्ति को चढ़ाया गया था और इस प्रकार यह आपको उपासना की वस्तु के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है, तो उसे न खाएँ। यद्यपि हमारे पास स्वतंत्रता है और सत्य का ज्ञान भी है कि भोजन वचन और प्रार्थना के द्वारा पवित्र किया जा सकता है (और किया भी जाता है)—फिर भी हम उसे नहीं खाते, उस व्यक्ति के कारण जिसने हमें वह भोजन दिया है, उसके विवेक के लिये।

हमारा कोमल और प्रेमपूर्ण इनकार उनके विवेक को सत्य के प्रति जागृत करेगा और उन्हें परमेश्वर की उपासना की ओर संकेत करेगा। मूर्ति को चढ़ाया गया भोजन न खाने का उद्देश्य यही है—अपने कार्य के द्वारा प्रेम और कोमलता से उन्हें जीवित परमेश्वर की ओर इंगित करना।

- **वचन 31-33:**

31 इसलिये तुम चाहे खाओ, चाहे पीओ, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिये करो।
32 तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिये ठोकर के कारण बनो।
33 जैसा मैं भी सब बातों में सब को प्रसन्न रखता हूँ, और अपना नहीं परन्तु बहुतों का लाभ ढूँढ़ता हूँ कि वे उद्धार पाएँ।

यहाँ जिन आधारभूत मनोभावों को हमें अत्यन्त महत्वपूर्ण रूप से बनाए रखना है, वे ये हैं:

1. हमें सब कुछ परमेश्वर का आदर और महिमा करने के लिये करना है। यही हमारी प्राथमिकता है।
2. हम किसी भी व्यक्ति को ठेस नहीं पहुँचाना चाहते। हम सब कुछ प्रेम, नम्रता और कोमलता के साथ करते हैं।
3. हम लोगों के साथ अच्छे सम्बन्धों में चलते हैं (प्रसन्न करना = सहमत और स्वीकार्य होना), क्योंकि हमारे हृदय की इच्छा है कि वे उद्धार पाएँ।

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार, 20 अक्टूबर 2019
1 कुरिन्थियों अध्याय 10

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी

लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी “All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर” मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: *1 कुरिन्थियों अध्याय 10*

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

1. *इस्राएल के इतिहास से पौलुस द्वारा बताए गए पाँच पापों की समीक्षा करें, जिनके विषय में वह हमें चेतावनी देता है। आप स्वयं को ऐसे ही पापों में गिरने से कैसे बचा सकते हैं?*
   a) *बरी बातों की लालसा*
   b) *मूर्तिपूजा*
   c) *लैगिक अशुद्धता*
   d) *मसीह को परखना*
   e) *कुड़कुड़ाना और शिकायत करना*

2. *1 कुरिन्थियों 10:13 पर चर्चा करें— यह वचन हमें उस परिस्थिती के विषय में क्या सिखाता है जब हम पाप की ओर आकर्षण या प्रलोभन का सामना करते हैं।*

3. *1 कुरिन्थियों 10:16-18 में प्रस्तुत, प्रभु की मेज़ के महत्व पर चर्चा करें।*

4. *अपने शब्दों में संक्षेप करें कि पवित्रशास्त्र मूर्ति को चढ़ाए गए भोजन के विषय में एक विश्वासी को क्या निर्देश देता है। अब अपने दैनिक जीवन की कुछ परिस्थितियों के बारे में सोचें जिनका आप सामना कर सकते हैं, और विचार करें कि पवित्रशास्त्र की शिक्षा के अनुसार आपको कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए।*

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1. *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2. *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3. *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।

यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/english
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org